International Journal of Gender, Science and Technology
ISSN: 2040-0748
UGC Care Group I Journal.
Vol-10 Issue-02 July 2021

Vises pichdi janjati kamar ki samajik va sanskritik pramparao par ek adhyan

Research Scholar

Lokmani Yadav (Sociology)

Kalinga University Raipur (C.G.)

विशेष पिछड़ी जनजाति कमार की सामाजिक व सांस्कृतिक परंपराओं पर एक अध्ययन
(छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध छात्र
लोकमनी यादव (समाजशास्त्र)
कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

सार

भारत में विभिन्न प्रकार की जनजातियां पाई जाती है जो हमारी संस्कृति की धरोहर हैं, इसके साथ ही भारत के छत्तीसगढ़ राज्य में कमार जनजाति को शासन के द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातियों में शामिल किया गया हैं तथा कमार जनजाति को गोंड जनजाति की उपजाति भी कहा गया है। कमार जनजाति जो कई वर्षो से जंगलों में निवास करते आ रहे हैं, जिसकी वजह से उनकी आर्थिक–सामाजिक स्थिति व विकास ठीक से नहीं हो पाया है, जिसकी वजह से कमार जनजाति में अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। यह जनजाति अत्यंत गरीब और पिछड़ी जनजातियों में शामिल है जो विकास की मुख्यधारा से विमुख हैं और अपनी सांस्कृतिक धरोहरों का बनाये होने के साथ ही इस आधुनिका के दौर में यह जनजाति अन्य जाति व आधुनिकता के प्रभाव से नहीं बच पाया है साथ ही यह जनजाति छत्तीसगढ़ के गरियाबंद, छुरा, मैनपुर तथा धमतरी जिले के नगरी तथा मगरलोड विकासखंड में प्रायः देखे जा सकते हैं। यह जनजाति अपना जीवन सीधा–साधा और सरल तरीके से अपना जीवनयापन करते हैं, ये जनजाति तीर धनुष, भाले और शरीर पर वस्त्र धारण करते हैं, जिसकी वजह से इस जनजाति का अलग पहचान बन जाती हैं। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में कमार जनजाति की सामाजिक व सांस्कृतिक परंपराओं पर अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दु – जनजाति, संस्कृति, परंपराएं, विकास, पिछड़ापन, परिवर्तन

प्रस्तावना

कमार जनजाति एक आदिम जनजाति है जो छत्तीसगढ़ राज्य में पाई जाती है, इसके साथ ही यह जनजाति छ.ग. राज्य के दक्षिणी भाग में निवास करती है। कमार जनजाति अधिकतर छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग के गरियाबंद एवं धमतरी जिले में पाया जाता है, इसके साथ ही वर्तमान समय में धीरे–धीरे इनका विस्तार अन्य जिलों में भी

होने लगा है। कमार बस्तर संभाग के विभिन्न जिलों में पाये जाते है प्रमुख रूप से बिन्द्रानवागढ़, फिंगेश्वर, मैनपुर, छुरा एवं धमतरी के नवागढ़ एवं सिहावा क्षेत्र में कमार जनजाति के निवास क्षेत्र के लिए प्रसिध्द है। हीरालाल के मतानुसार कमार की प्रजाति द्रविड़ है और यह गोंड़ जनजाति की एक शाखा है। गोड़ जनजाति की 42 उप–जातियाँ है जिनमें से एक कमार जनजाति है, यही कारण है कि गोंड एवं कमार जनजाति की सामाजिक व्यवस्था एवं गोत्र व्यवस्था में समानता पाई जाती है।

छत्तीसगढ़ में जनजाति

भारत की जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से छ.ग. राज्य मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, गुजरात एवं झारखंड के बाद देश में सातवें स्थान पर है। सभी राज्यों में जनजातीय स्त्री–पुरुष लिंगानुपात की दृष्टि से गोवा, केरला, अरूणाचल प्रदेश, उड़ीसा के बाद छत्तीसगढ़ राज्य 5 वें स्थान पर है इसके साथ ही सरकार द्वारा छ.ग. राज्य के लिए जारी अनुसूचित जनजाति की सूची में कुल 42 आदिवासी समूह और उपजातियों को अधिसूचित किया गया है। सरकार द्वारा निर्धारित मापदण्ड यथा जनसंख्या वृध्दि दर में स्थिरता या निरतर कमी, द्वारा निर्धारित मापदण्ड यथा जनसंख्या वृध्दि दर में स्थिरता या निरतरता कमी, साक्षरता का न्यूनतम स्तर, प्राकृतिक कृषि स्तर की तकनीक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ापन के आधार पर अनुसूचित जनजातियों में से 75 अनुसूचित जनजातीय समुदायों को विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित करते हुए उनके समग्र विकास की व्यवस्था कि गई हैं। कमार जनजाति छत्तीसगढ़ के कुल 11 विकासखंडों में निवासरत है।

जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट जीवन–शैली, रहन–सहन, रीति–रिवाज, प्रथा, बोली, परम्परागत वेशभूषा, देवी–देवता, उत्सव, लोक–नृत्य लोकगीत, हस्तशिल्प, खेलकूद आदि सांस्कृतिक विविधताओं के कारण देश के जनजातीय मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान है। आदिम जाति कल्याण विभाग के आकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में जनसंख्या का कुल जनसंख्या 23,288 है, जोकि 429 ग्रामों के अन्तर्गत 5,542 परिवार में निवासरत है। कमार जनजाति की कुल जनसंख्या का लगभग 61 प्रतिशत गरियाबंद जिले में निवासरत् है, साथ ही शेष अन्य जिलों में निवासरत् है, यह मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण भाग में है। यह मुख्यतः विन्द्रानवागढ़, फिगेश्वर, गरियाबंद, छुरा, नगरी, सिहावा, आदि क्षेत्रों में अधिक है।

छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या
तालिका क्रमांक – 1

अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या	7822902
पुरुषों में साक्षरता दर	43.05 प्रतिशत
महिलाओं में साक्षरता दर	21.88 प्रतिशत
कमार जनजाति की कुल जनसंख्या	23,113
पुरुषों की जनसंख्या	11,413
महिलाओं की जनसंख्या	11,700

वर्ष 2011 के आंकड़ों के अनुसार

कमार जनजाति की उत्पत्ति

कमार जनजाति के उत्पत्ति के विषय में विचारकों के विचार में कई अंतर पाया गया है। लेखकों ने अपने अध्ययन के आधार पर उनकी उत्पत्ति के बारे में बतलाया है कि इनमें सर्वमान्य अध्ययन के आधार पर कमार अपने को गोड़ों का वंशज मानते है। कमारों की उत्पत्ति के संबंध में अवधारणा यह हैं कि जब पृथ्वी में महाप्रलय हुआ और उसके थमने पर भगवान ने एक पुरुष व एक स्त्री का निर्माण किया, जिनसे सृष्टि की उत्पत्ति हुई। दूसरी धारणा में "कमार जनजाति की मान्यताओं के आधार पर कचरा और घुरवा कमार थे और आज भी कमार अपनी उत्पत्ती उसी से मानते है, लेकिन दूसरी ओर दुबे के अनुसार कचरा और धुरवा कमार न होकर गोड़ थे।" कमार जनजाति अपनी उत्पत्ति मैनपुर विकासखंड के देवडोंगर ग्राम से बताते हैं, उनका सबसे बड़ा देवता आज भी देवडोंगर की "वामन डोंगरी" में स्थापित है, इसे वामनदेव के नाम से जाना जाता है।

कमार जनजाति की सामाजिक व्यवस्था

छत्तीसगढ़ में जनजातियों में कमार जनजाति के समाज में दण्ड का देने का तरीका बहुत ही सरल है। कमार जनजाति में दण्ड स्वरूप सम्पूर्ण समाज को भोज एवं समाज से बहिष्कृत करने की परम्परा देखी गई है। कमारों में कोई केन्द्रीय अधिसत्ता नहीं होती है, इसके साथ ही कमार जनजाति में भी सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए एक जाति पंचायत होती है। प्रत्येक परिवार का व्यक्ति इस पंचायत का सदस्य होता है तथा पंचायत के प्रमुख को "मुखिया" कहते हैं और सामान्य विवादों का निपटारा उस गांव में ही कर दिया जाता है, इसके साथ ही अनेक ग्रामों को मिलाकर एक क्षेत्रीय स्तर की जाति पंचायत बनाई जाती है। जब कोई त्यौहार, मेला या सामूहिक पर्व मनाया जाता है, तब उस समय पंचायत की बैठक आयोजित की जाती है, इसके साथ ही इस पंचायत में वैवाहिक विवाद, अन्य जाति के साथ वैवाहिक या अनैतिक संबंध आदि विवादों का समाधान किया जाता है। पंचायत के सदस्य अधिकतर बुजुर्ग होते है एवं इनका निर्णय सभी जनों को स्वीकारा होता है और जनजाति पंचायत के दंड स्वरूप में अपराधी व्यक्ति को समाज से बाहर कर दिया जाता है। आदिम समाज में सामाजिक भोज का आयोजन करना बड़ी बात होती है और कमार आर्थिक दृष्टि से बहुत गरीब होते है, ऐसी स्थिति में किसी कमार जनजाति के लिए सामाजिक भोजन का आयोजन करना एक कठिन कार्य होता है, इसके साथ ही कुछ आपराधिक क्रियाओं के दंड को दैव शक्ति (भगवान) पर छोड़ दिया जाता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन

कमार जनजाति के लोगों का व्यवसाय अधिकतर शिकार पर आधारित होते हैं, साथ ही कमार जनजाति के लोग वन देवताओं की पूजा करते है। शिकार मारने के बाद शिकार का सिर काटकर उसे पानी से धोया जाता है, इसके बाद इसे वन देवता को अर्पित कर दिया जाता है वन देवता की पूजा के बाद ही शेष भाग ग्रहण किये जाने की परम्परा प्रचलन में हैं। वन देवताओं के अतिरिक्त गाता डूमा, धरती माता, दुल्हादेव, माता दाई, बडी दाई, छोटी दाई, ठाकुर देव आदि देवी देवता है, जिनकी कमार पूजा करते है। कमार जनजाति के लोग लोहे की पूजा करते है, क्योंकि इनके हथियार अधिकतर लोहे के बने होते है, ये लोग लोहे की पूजा को दुर्गा पूजा मानते है। दशहरा तथा दुल्हादेव और अन्य देवी देवताओं की पूजा के दिन घर में आग नहीं जलाई जाती है।

साथ ही कमार जनजातियों में लैंगिक असमानता कम पाई गई है यही कारण है कि इनका लिंगानुपात भारत एवं छत्तीसगढ़ की छवि की अपेक्षा अधिक अच्छी है,

आवश्यकता है कि ऐसे समाज जो अपनी संस्कृति को नियमित रूप से उन्नत मानते हैं और बेटी जन्म न लें, इसलिए उन्हें भ्रूण के रूप में ही खत्म कर देते हैं, ऐसे लोग कमर जनजाति से कुछ सीख सकते हैं, जहां एक ओर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विवाह कार्यक्रमों के आयोजन संबंधी गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं, वहीं लोग अपने सामाजिक–आर्थिक प्रदर्शन के लिए करोड़ों खर्च कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कमार जनजाति में सबसे पहले की तुलना में कम होना भी हमें कुछ सिखाना चाहता है।

कमार जनजाति के प्रमुख देव कचंना धुरवा, बूढ़ादेव, ठाकुरदेव, दूल्हादेव, बड़ी माता, मंझली माता, छोटी माता, बूढ़ी माई, धरती माता आदि हैं। पोगरी देवता (कुलदेव), मांगरमाटी (पूर्वजों के गांव व घर की मिट्टी) गाताडूमा (पूर्वज) की भी पूजा करते हैं, इसके साथ ही इस जनजाति में बलिप्रथा भी पाई गई है, पूजा में मुर्गी, बकरा आदि की बलि भी चढ़ाते हैं, इनके प्रमुख त्यौहार हरेली, पोला, नवाखाई, दशहरा, दीवाली, छेरछेरा, होली आदि हैं। त्यौहार के समय मुर्गा का मांस खाते एवं शराब पीते हैं। कमार जनजाति भूल–प्रेत, जादू टोना पर भी विश्वास करते हैं तथा तंत्र मंत्र की जानकारी रखने वाला व्यक्ति बैगा कहलाता है।

भौतिक संस्कृति

कमार जनजाति के लोगों के कच्चे मिट्टी व घास–फूस के बने मकानों में निवास करते हैं, जिसमें लकड़ी या बांस का किवाड़ होता है। छप्पर घासफूस या खपरैल की होती है और दीवरों पर सफेद मिट्टी की पुताई करते हैं। फर्श मिट्टी का होता है, जिसे घर की महिलाएं गोबर से लीपती हैं, साथ ही कमार जनजाति की महिलाएं हाथ–पैरों पर गुदना गुदवाती है। नकली चांदी, गिलट आदि के गहने हाथ की कलाई में ऐंठी, नाक में फुली, कान में खिनवा आदि पहनती हैं। वस्त्र में पुरुष पंछा (छोटी धोती) बंडी, सलूका एवं स्त्रियाँ लुगड़ा (साड़ी) पोलका पहनती हैं।

आर्थिक जीवन

इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय बांस के सूपा, टूकनी बनाकर बेचना, शिकार, कंदमूल तथा जंगली उपज संग्रह करना और कृषि करना होता है, इनकी कृषि पद्धति आज भी पुरानी पीढ़िगत अवस्था में है। इस जनजाति का आर्थिक जीवन का दूसरा पहलू वनोपज संग्रह है, जिसमें महुआ, तेंदू, सालबीज, बांस, चिरौंजी, गोंद, आंवला आदि संग्रह करते हैं। इस जनजाति के लोग शिकार करते हैं अतः तीर–धनुष तथा मछली पकड़ने का जाल सभी घरों में होता है। कमार जनजाति का भोजन चावल, कोदो की पेज, भात, बासी, कुल्थी, बेलिया, मूंग, उड़द, तुअर की दाल तथा मौसमी

सब्जियाँ, जंगली सागभाजी है। मांसाहार में सुअर, हिरण, खरगोश, मुर्गा, विभिन्न प्रकार के पक्षियों का मांस तथा मछली खाते हैं। पुरुष महुआ की शराब बनाकर पीते हैं और पुरुष धूम्रपान के रूप में बीड़ी व चोंगी पीते हैं।

विवाह एवं मृत्यु

कमार जनजाति में लड़कों का विवाह 18–19 वर्ष की उम्र में तथा लड़कियों का विवाह 16–17 वर्ष की उम्र में कर दिया जाता है। मामा या बुआ के लड़का–लड़की से इनका विवाह करा दिया जाता हैं साथ ही विवाह तय होने पर वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष को चावल, दाल व नगद, कुछ रुपया "सूक" (वधुमूल्य) के रूप में दिये जाते हैं। विवाह रस्म कमार जनजाति में बड़े बूढ़ों की देख–रेख में संपन्न होती है, इसके साथ ही सामान्य विवाह के साथ ही गुरावट, "लमसेना" (घर जमाई) प्रथा भी प्रचलित है। पैटू (घुसपैठ), उढ़रिया (सहपलायन) को सामाजिक दण्ड के बाद समाज स्वीकृति मिल जाती है। विधवा, परित्यक्ता, पुनर्विवाह (चूड़ी पहनाना) को मान्यता है। इस जनजाति की महिलाएं दिवाली में सुवा नाचती हैं। विवाह में पुरुष व महिलाएं दोनों नाचते हैं। पुरुष होली व दीवाली के समय खूब नाचते हैं।

कमार जनजाति में मरने के बाद मृतक के शरीर को नहीं जलाते बल्कि दफनाते हैं, तीसरे दिन तीज नहावन होता है, जिसमें परिवार के पुरुष सदस्य दाढ़ी, मूंछ व सिर के बाल मुंडन कराते हैं। घर की सफाई स्वच्छता कर सभी स्थान पर हल्दी पानी छिड़कते हैं, अपने शरीर के कुछ भागों में भी लगाते हैं, इसके साथ ही तेरहवें दिन मृत्यु भोज देते हैं।

आधुनिकता के कारण परिवर्तन

शासकीय विकास कार्यक्रम शिक्षा, संचार, यातायात तथा बाह्य संपर्क के कारण कमार जनजाति के रहन–सहन, वेशभूषा में काफी परिवर्तन आया है। बच्चे आश्रम स्कूल तथा स्थानीय स्कूलों में पढ़ने लगे हैं, इसके साथ ही कमार जनजाति के लोग स्थानांतरण कृषि की जगह अब स्थायी कृषि करने लगे हैं।

अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व

यह अध्ययन कमार जनजाति पर आधारित है जो प्रारंभ से ही दुर्गम एवं अभावग्रस्त क्षत्रों में निवास करने के कारण अत्यंत पिछड़ी हुई जनजाति के अन्तर्गत आते है, लेकिन वर्तमान समय में यह जनजाति आधुनिक व अन्य जनजातियों के संपर्क में आने से तथा विकसित क्षेत्र की ओर पलायन से इनकी संस्कृति, सामाजिक और

आर्थिक स्थिति में परिवर्तन देखने को मिला है। कमार जनजाति की सांस्कृति विशेषताओं के कारण ही यह जनजाति देश की आदिम जनजाति समूह में शामिल है। आदिम जनजाति होने के कारण कमार जनजाति के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चौथी पंचवर्षीय योजना से ही निरन्तर प्रयासरत रही है, ऐसी स्थिति में कमार जनजाति के सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थित पर अध्ययन करना और उसकी आवश्यकता को प्रदर्शित करता है।

कमार जनजाति के विकास में समस्याएं

1. जंगली क्षेत्रों में जनजाति समुदायों के लिए यातायात सुविधाओं का अभाव है।
2. जनजाति समुदायों को कई अन्य धर्मो के द्वारा लालच देकर धर्म परिवर्तन कराये जा रहे है जिससे की जनजातिय समुदाय अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं।
3. जनजाति समुदाय के लोगों की आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण वे अक्सर ऋणग्रस्ता का शिकार हो जाते है, साथ ही जनजाति समुदाय के लोगों में नशाखोरी भी एक बड़ी समस्या है।
4. सूखे या कुछ विकास परियोजनाओं से बुरी तरह से प्रभावित जनजाति समुदाय का पुनर्वास एक लंबी और कठिन प्रक्रिया रही है। समुदाय की आजीविका के मुख्य स्त्रोत, खेती और पशुपालन, सूखे से बुरी तरह प्रभावित हुए है।
5. जंगल में रहने वाले जनजाति समुदायों के लंबे समय से पारंपरिक आजीविका का स्त्रोत रहें हैं, लेकिन पिछड़े कुछ दशकों में जंगल संघर्ष और संसाधन शोषण का स्त्रोत भी बन गए है।
6. जनजाति क्षेत्रों में होने वाली तीव्र औद्योगिक गतिविधि के कारण जनजातिय समुदाय के लोगों को अपने जमींन व जंगलों से दूर होते जा रहे है।
7. जंगली क्षेत्रों में रहने के कारण इस जनजाति के लोगों में अशिक्षा की स्थिति पाई गई है, जिसके कारण से वे जागरूक नहीं हुवे हैं।
8. कमार समुदाय के लोगों का दूसरी समूदाय के लोगों के संपर्क में आने से कमार जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं में परिवर्तन होने लगे है।
9. प्रायः उच्च वर्ग के द्वारा जनजाति समुदाय को पैसे का लालच देकर पलायन और बंधवा मजदूर बना लिये जाते है।

सुझाव

कमार जनजाति के विकास के लिए पहली आवश्यकता यह है कि कमारों के निवास क्षेत्र को 'कमार विकास प्राधिकरण' क्षेत्र में शामिल किया जाए, इसके लिए 'विकास प्राधिकरण' की एक उपशाखा यहां पर स्थापित की जाए।

1. कमार जनजाति के लोग कृषि का कार्य करते हैं, साथ ही अधिकांश परिवार भूमिधर हैं, इसलिए कमार जनजाति के लोगों के लिए कृषि को उन्नत बनाने एवं उद्यानिकी के लिए उपयोगी योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्यवयन की आवश्यकता है।
2. कमार जनजाति की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए स्त्री साक्षरता को बढ़ावा देने वाले लाभों के निर्माण की आवश्यकता है। कम उम्र के बच्चों को बचपन में शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाता है।
3. कमार जनजाति के लोग कृषि के साथ–साथ बांस बर्तन निर्माण और कुटीर उद्योग कर अपना जीवन यापन करते हैं। अतः शासन के द्वारा कमार जनजाति के लोगों को आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
4. 'विकास अभिवर्तन क्षेत्र' के अंतर्गत अनेक विकासात्मक योजनाओं की प्रत्येक के बाद भी इन परिवारों का पलायन चिंतनीय तथ्य है, इसके अतिरिक्त इस बात की भी आवश्यकता है, कि इनके पलायन को रोका जाए और आदिम जनजातियों को उनके क्षेत्र में ही विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएं और उन्हें विकास की मुख्यधारा में सर्वांगीण रूप से जोड़ा जा सका।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध अध्ययन में पाया गया है कि 21 वीं सदी में वैश्वीकरण के युग में कमार जाति अपनी सभ्यता को संजाए एवं संभाले हुए है, लेकिन आधुनिकता के दौर में अन्य जातियों के संपर्क में आने से व शहरीकरण होने से कमार जनजाति अपनी संस्कृति को बचाए हुए हैं। इसके साथ ही इनके युग की पुष्टि इस बात से होती है कि आज भी इनमें शिक्षा जैसी एक न्यूनतम आधुनिक सामाजिक स्थिति बहुत कम हैं, इनके जीवन–यापन के मूल तत्वों में इनकी झलक अवश्य मिलती है, वे भी बाहरी आकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं।

राज्य सरकार के द्वारा कमार जनजाति के कल्याण व उसके जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए एक समीति का गठन किया गया है, क्योंकि कमार जनजाति अन्य जनजाति की अपेक्षा अधिक पिछड़े हुए पाये जाते है। इस जनजाति को विभिन्न प्रकार की सुविधा मिल रही हैं, लेकिन फिर भी यह सुविधा उनके लिए पर्याप्त नहीं है। इनके

विकास के लिए रोजगार और जीवकोपार्जन से संबंधित व कौशल विकास केंद्रित प्रशिक्षण करने की आवश्यकता है। शासन के कोशिशों के बाद भी जनजाति समाज में अशिक्षा, ऋण ग्रस्सता, शोषण तथा निर्धनता जैसी समस्याओं से ग्रसित है। ऐसी स्थिति में कमार जनजाति की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति एवं समस्याओं के साथ ही इस जाति की सांस्कृति का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। कमार जनजाति के क्रियान्वयन के लिए उनकी योजना में गुणवत्ता तथा पुनर्वास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही इनके लिए उचित रोजगार के अवसरों में वृद्धि करनी चाहिए जिससे उनका विकास हो सके और उनकी संस्कृति को आधुनिकता इस दौर में लुप्त होने से बचाया जा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वैष्णव डॉ. टी.के. (2004) छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियां, प्रकाशक–आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर : पृष्ठ संख्या –34.
2. प्रधान अशोक तथा चक्रवती मोयना (2007) परियोजना रिर्पोट "कमार के विकास के लिए एक योजना : छत्तीसगढ़ की सबसे आदिम जनजाति" (स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक विकास के विशेष संदर्भ के साथ), छत्तीसगढ़ विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा प्रायोजित, रायपुर : पृष्ठ संख्या –45.
3. शर्मा रश्मि एवं प्रधान अशोक (2010) महासमुंद जिले के राजाओं की आर्थिक स्थिति एवं विकास प्राधिकरण के राजाओं के साथ तुलनात्मक अर्थशास्त्रीय अध्ययन, ISSN(o)- 0975-6795, (p) 2321-5828 : पृष्ठ संख्या –67.
4. प्रेमी जितेन्द्र कुमार, सोनी प्रवीण कुमार, नागवंशी बृजेश कुमार एवं खुंटे डिकेन्द्र (2013) विशेष पिछड़ी (आदिम) जनजाति कमार : एक नृजतिवृतांततात्मक परिदृश्य, 4(2),ISSN(o)- 0975-6795, (p)- 2321-5829 : पृष्ठ संख्या –46..
5. जैन सुनीता (2016) अनुसूचित जाति एवं जनजाति की आर्थिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन (दमोह जिले के विशेष संदर्भ में), *International journal of review and research in social science, 4(4)* : पृष्ठ संख्या – 437–442.
6. मेश्राम बी.एन. (2018) भारत में जनजातियां : छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में, *International journal of review and research in social science, 6(4)* : पृष्ठ संख्या – 23.

7. सिंह टी.के. (2019) छत्तीसगढ़ में कंवर जनजाति : एक सामान्य अध्ययन, *International journal of review and research in social science,* 7(2) : पृष्ठ संख्या – 87.
8. लाल ध्रुव कीर्तन (2019) आदिम जाति कमार के विकास में शासकीय विकास योजना की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन गरियाबंद जिले के छुरा और गरियाबंद विकासखंड के विशेष संदर्भ में, पी.एच.डी., शोध–प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर : पृष्ठ संख्या –17.
9. वर्मा राज कुमार एवं प्रेमी जितेन्द्र कुमार (2020) छत्तीसगढ़ में कमार जनजाति में गोदना कला, *An International Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal,* 7(25) : पृष्ठ संख्या – 79.
10. आबिदी शम्मी, विरूलकर डॉ अनिल तथा दास अमर (2020) कमार एक विशेष पिछड़ी जनजाति, आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ : पृष्ठ संख्या – 89.
11. सिंह कुबेर गुरूपंच तथा चन्द्राकर राजु (2022) कमार जनजाति के सामाजिक आर्थिक स्थिति का भौगोलिक अध्ययन, *international journal of reviews and research in social sciences,* vol- 10(3) : पृष्ठ संख्या –45.